तर्कभाषा

* 16 पदार्थ –

1. प्रमाण
2. प्रमेय
3. संशय
4. प्रयोजन
5. दृष्टान्त
6. सिद्धान्त
7. अवयव
8. तर्क
9. निर्णय
10. वाद
11. जल्प
12. वितण्डा
13. हेत्वाभास
14. छल
15. जाति
16. निग्रह

* प्रमाकरणं प्रमाणं ।
* लक्ष्य = प्रमाणं   लक्षण = प्रमाकरणम् ।
* तन्तु (समवायिकारण) ⟹ पट —समवायिकारण⟶ पटरूप
* तन्तुरूप (अन्यथासिद्ध ⟹ पट ⟶ पटरूप
  (कल्पनागौरव)   असमवायिकारण परम्परया
* सम्बन्ध = (1) समवाय (2) संयोग
* अवयवी अवयवों के आश्रित रहते हैं – यथा – पत्रों में वृक्ष ।
* ~~प्रथम~~ घटोत्पत्ति में प्रथम निर्गुण घट उत्पन्न होता है। (दोषोज उत्पन्न)
* भावपदार्थों के ही तीन कारण होते हैं। अभाव – निमित्तकारण ।
  (समवायसम्बन्धाभावात्)
* क्रिया से लेकर संयोग तक चार कार्य –
  1. क्रिया ।
  2. क्रिया से विभाग।
  3. विभाग से पहले संयोग का नाश।
  4. उत्तर देश में संयोगोत्पत्ति ।
* प्रमायाः करण = इन्द्रियसंयोगादिरेव करणम् ।
* प्रत्यक्ष प्रमा = (1) सविकल्पक (2) निर्विकल्पक ।
* प्रत्यक्ष प्रमा के (3) करण –
  1. इन्द्रिय
  2. इन्द्रियार्थसन्निकर्ष
  3. निर्विकल्पक ज्ञान
* "कार्यानुकूलान्वयव्यतिरेकि कारणम्" – अव्याप्ति दोष ।

करण	अवान्तरव्यापार	फल
(1) इन्द्रिय	इन्द्रियार्थसन्निकर्ष	निर्विकल्पकज्ञान
(2) इन्द्रियार्थसन्निकर्ष	निर्विकल्पकज्ञान	सविकल्पकज्ञान
(3) निर्विकल्पकज्ञान	सविकल्पकज्ञान	हानोपादानोपेक्षाबुद्धि

* बाह्येन्द्रिय में केवल 'चक्षु, त्वक्' से ही घट पटादि द्रव्यों का प्रत्यक्ष होता है।

* अन्तरिन्द्रिय में 'मन' के द्वारा आत्मा का प्रत्यक्ष होता है।

* ये तीन इन्द्रियां ही "संयोगसन्निकर्ष" के द्वारा 'अर्थ' का प्रकाश करती हैं।
  चक्षु, त्वक्, मन

* घट के परिमाण, संख्या आदि गुणों को ग्रहण करने में चतुष्टयसन्निकर्ष को अतिरिक्त कारण माना जाता है—
  1. इन्द्रियावयवैरर्थावयविनाम्। — इन्द्रिय अवयव अर्थावयवी
  2. इन्द्रियावयविनामर्थावयवानाम्। — इन्द्रिय अवयवी अर्थावयव
  3. इन्द्रियावयवैरर्थावयवानाम्। — इन्द्रिय अवयव अर्थावयव
  4. अर्थावयविनामिन्द्रियावयविना। — इन्द्रिय अवयवी अर्थावयवी।

* अभाव तथा समवायसम्बन्ध दोनों का इन्द्रिय से विशेषणविशेष्यभाव सन्निकर्ष द्वारा प्रत्यक्ष किया जाता है।

* पञ्चविध सम्बन्धों में से किसी एक से सम्बन्धित विशेषण-विशेष्यभाव के द्वारा अभाव का ग्रहण होता है।

* समवाय का ग्रहण केवल — संयोग, संयुक्तसमवाय, समवाय इन तीनों में से किसी एक सम्बन्ध से सम्बन्धित विशेषणविशेष्यभाव सन्निकर्ष के द्वारा होता है।

* समवाय सम्बन्ध रखता है — द्रव्य, गुण, कर्म में।

* द्रव्य हमेशा समवायिकारण होता है।

* धूमरूप लिङ्ग के तीन ज्ञान –

(1) पाकशाला में अग्नि धूम दर्शन। (वह्निव्याप्यो धूमः)

(2) पर्वत पर धूम देखना। (व्याप्तिस्मरण) (धूमो वह्निव्याप्तः)

(3) पर्वत वह्नि से युक्त। (वह्निव्याप्यधूमवानयं पर्वतः।)

तृतीय ज्ञान [लिङ्गपरामर्श ज्ञान]

[illegible]

* उपाधि = (1) योग्य (2) अयोग्य
  प्रत्यक्षयोग्य — प्रत्यक्ष अयोग्य

* हिंसात्व के साथ अधर्मत्व के सम्बन्ध में उपाधि = निषिद्धत्व
* मैत्रीतनयत्व के साथ श्यामत्व के सम्बन्ध में " = शाकादिपरिणाम (शाकपाकजन्य)

* धूम और अग्नि का सम्बन्ध = स्वभाविक।

'स्वाभाविकश्च सम्बन्धो व्याप्तिः'।

'नानुपलब्धे न निर्णीतेऽर्थे न्यायः प्रवर्तते किन्तु सन्दिग्धे।'

(1) अन्वय व्याप्ति => साधन (व्याप्य) — साध्य (व्यापक)
व्यतिरेकव्याप्ति => साध्य (व्याप्य) — साधन (व्यापक)

(2) केवलव्यतिरेकी – "जीवच्छरीरं सात्मकं प्राणादिमत्वात्"।

साध्य = सात्मकत्वं साधन = प्राणादिमत्वं पक्ष = जीवच्छरीरं

'यत् प्राणादिमत् तत् सात्मकं इत्यत्र अन्वयव्याप्तेरभावः'।

"पृथिवीलक्षणं गन्धवत्वम्"। 'अत्र लक्षणे केवलव्यतिरेकी'।

"प्रत्यक्षादिकं प्रमाणमिति व्यवहर्तव्यं प्रमाकरणत्वात्"।

साध्य = व्यवहार

③ केवलान्वयी = "शब्दोऽभिधेयः प्रमेयत्वात्"।
यदभिधेयं न भवति तत्प्रमेयमपि न भवति। इत्यत्र व्यतिरेक व्याप्ति अभावात्।

अन्वयव्यतिरेकी हेतु की पञ्चरूपोपपन्नता—

① पक्षसत्व (हेतु का पक्ष में रहना) (धूमवत्वे हेतौ पर्वतः)
② सपक्षसत्व (पक्ष में साध्य का निश्चय हो जाना) (तत्रैव महानसम्)
③ विपक्षव्यावृत्ति (हेतु की विपक्ष से व्यावृत्ति) (तत्रैव महाह्रदः)
④ अबाधितविषयत्व (साध्य बाधित न हो)
⑤ असत्प्रतिपक्षत्व (हेतु का प्रतिपक्ष न होना)

* केवलान्वयी हेतु के चार रूप होते हैं। उसमें 'विपक्षव्यावृत्ति' नहीं रहती, वहां पर कोई विपक्ष नहीं रहता।

* केवलव्यतिरेकी में भी चार रूप। उसमें 'सपक्ष' नहीं रहता।

हेत्वाभास => ① असिद्ध
- ① आश्रयासिद्ध — गगनारविन्दं सुरभि
- ② स्वरूपासिद्ध — शब्दोऽनित्यः चाक्षुषत्वात्
- ③ व्याप्यत्वासिद्ध
  - व्याप्तिग्राहकप्रमाणाभावात् — (शब्दः क्षणिकः सत्वात्)
  - उपाधिसद्भावात् — क्रत्वन्तर्वर्तिनी हिंसा अधर्मसाधनं हिंसात्वात् (शास्त्रनिषिद्धत्व कारण)
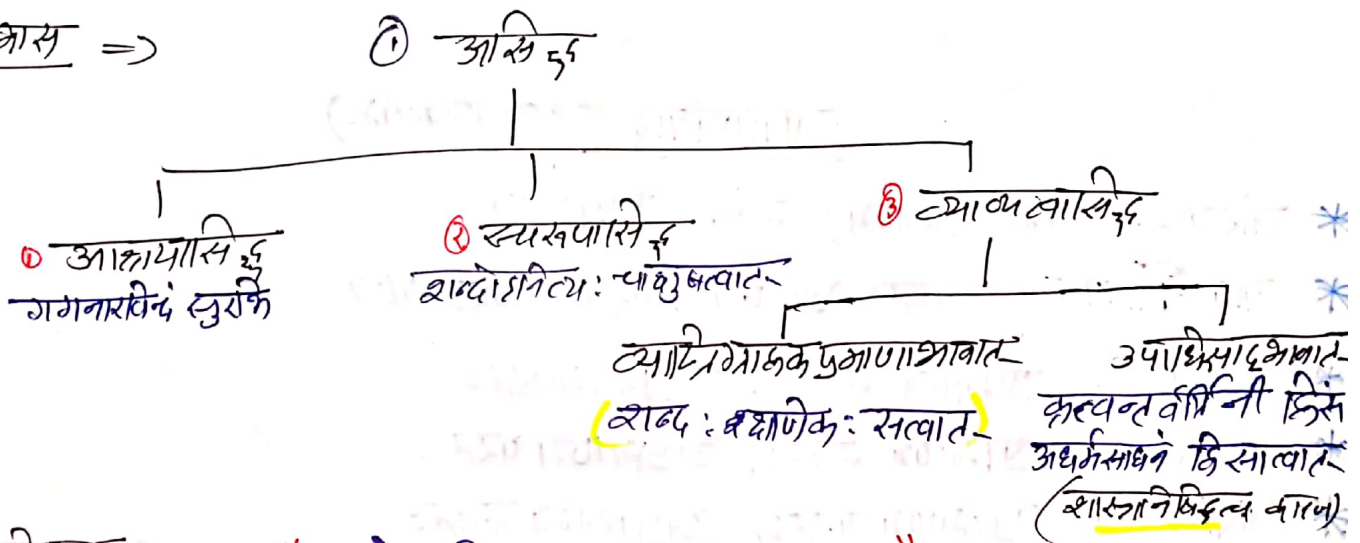
② विरुद्ध ⟹ "शब्दो नित्यः कृतकत्वादात्मवत्"।

③ सव्यभिचार (अनैकान्तिक)
- साधारण (पक्ष, सपक्ष, विपक्ष तीनों में) (जैसे - शब्दो नित्यः प्रमेयत्वात् व्योमवत्)
- असाधारण (केवल पक्ष में) (भूर्नित्या गन्धवत्वात्)
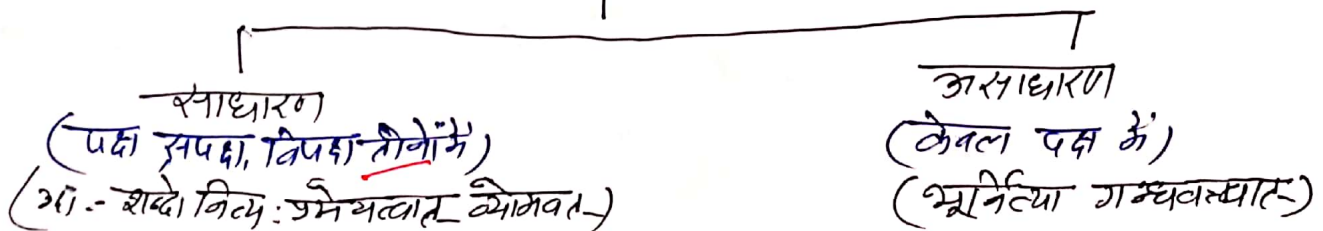
(4) प्रकरणसम => "शब्दो ऽनित्य धर्म रहितत्वात्" | "शब्दोऽनित्य: कार्यत्वात्" "शब्दोऽनित्य: श्रावणत्वात् शब्दत्वत्"
(सत्प्रतिपक्ष)

(5) बाधित => अग्नि: अनुष्ण: कृतकत्वात् जलवत् ।
(कालात्ययापदेश)

प्रमेय — 12

(1) आत्मा	(5) बुद्धि	(9) प्रेत्यभाव
(2) शरीर	(6) मन	(10) फल
(3) इन्द्रिय	(7) प्रवृत्ति	(11) दु:ख
(4) अर्थ	(8) दोष	(12) अपवर्ग

अर्थ — 6 (वैशेषिक पदार्थों का अन्तर्भाव इसमें)

(1) द्रव्य (2) गुण (3) कर्म (4) सामान्य (5) विशेष (6) समवाय ।

प्रामाण्यवाद (अनुभवरूपम्)

* सांख्य — स्वत: प्रामाण्य, स्वत: अप्रामाण्य
* न्याय-वैशेषिक — परत: प्रामाण्य, परत: अप्रामाण्य
* मीमांसा — प्रामाण्य स्वत:, अप्रामाण्यपरत:
* वेदान्त — प्रामाण्य स्वत:, अप्रामाण्य परत:
* बौद्ध — प्रामाण्य परत:, अप्रामाण्य स्वत:
  (कमलशील) — प्रामाण्य एवं अप्रामाण्य दोनों कहीं स्वत: कहीं परत:।
* जैन — प्रामाण्य एवं अप्रामाण्य दोनों कहीं स्वत: कहीं परत:। (उत्पत्ति में स्वत: ज्ञप्ति में परत:)

समवायिकारण दो प्रकार —

* ① कार्यैकार्थप्रत्यासत्ति
↓
पटके प्रति तन्तुसंयोग।

② कारणैकार्थप्रत्यासत्ति
↓
पटरूप के प्रति तन्तुरूप

* अलौकिक सन्निकर्ष — त्रिविधः   लौकिक सन्निकर्ष — षड्विध
* व्याप्ति — द्विविधा   शब्दप्रमाण — द्विविधम्
* न्यायशास्त्रे दुःखम् — 21
* न्यायमत में परसत्ता मानी जाती है — द्रव्य, गुण कर्म।
* प्रामाण्य होता है — अनुभवत्वम्।
* न्यायनये चमस्य स्वरूपम् — सामान्य
* उद्भूत रूप कारण होता है — चाक्षुष प्रत्यक्ष।
* अतिदेशवाक्यार्थज्ञान — त्रिविधः। ① सादृश्य ② असाधारणधर्मविशिष्टपिण्डज्ञान ③ वैधर्म्य
* साध्यधर्मविशिष्ट धर्मप्रतिपादकवचनं — प्रतिज्ञा।
* नैयायिकों के मत में शक्ति का अन्तर्भाव होता है — अभाव में
* 'पर्वतो वह्निमान्' इसमें साध्यतावच्छेदक सम्बन्ध है — समवाय। (न्यायसिद्धा.) —
* न्यायमते सुवर्णस्य तैजसत्वं — उद्भूताभिभूतरूपस्पर्शम्।
* तर्कभाषासम्मत अपवर्ग है — दुःखस्यात्यन्तिकी निवृत्तिः।
* न्यायदर्शन के अनुसार जीवन का लक्ष्य — निःश्रेयस।
* निर्विकल्पकज्ञान है — संसर्गताशून्य ज्ञान
* न्यायदर्शन के अनुसार त्र्यणुक का परिमाण — महत्परिमाण।
* ज्ञाननिवर्त्य होता है — जगत्
* नैयायिकों के मत में ज्ञान है — निराकार।
* न्यायमत में परसत्ता मानी जाती है — द्रव्य - गुण - कर्म
* कालद्रव्य में गुण होते हैं — 5
* वैशेषिक मत में पाक होता है — परमाणु में।